शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी॰एस॰एन॰पी॰जी॰ कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

– डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव

महाकाव्य की परंपरा पाश्चात्य एवं पौरस्त्य साहित्य में अत्यन्त प्राचीन काल से चली आ रही हे। प्रस्तुत शोध आलेख महाकाव्यों के लक्षणों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

विषय संकेतः– महाकाव्य, रामायण, महाभारत, वाल्मीकि

महाकाव्य की सृजनधारा आदि काल से निरन्तर गतिशील है। भारत ही नहीं, विश्वभर के प्रारम्भिक महाकाव्यों के मूल स्त्रोत आदिम साहित्य या इतिहास से ही प्राप्त होते हैं। इन महाकाव्यों के मूल में सामाजिक चेतना विद्यमान है। इनके निर्माण के पीछे सैकड़ों वर्षों के सामाजिक हर्ष-पुलक का इतिहास है।

प्रारम्भिक गाथाओं से गाथा चक्रों तथा उनसे प्रारम्भिक या विकसनशील महाकाव्यों का विकास हुआ। इनकी रचना किसी एक युग में अथवा किसी एक व्यक्ति द्वारा नहीं होती बल्कि उनके निर्माण के पीछे सहस्त्रों प्रतिभाओं तथा अनेक युगों का हाथ रहता है। कोई विशिष्ट प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति जब इन मौखिक और लोकप्रिय परम्परा से आती गाथाओं को सवार कर नया रूप प्रदान करता है तभी महाकाव्य की रचना होती है। इस सम्बन्ध में एमेकनील डिक्सन का कथन है- 'प्रारम्भिक महाकाव्य का जो सुष्ठु और विकसित रूप आज प्राप्त है, उसके निर्माण में न जाने कितने काव्यों और आख्यानों का उपयोग किया गया होगा''[1]

भारत के आदि महाकाव्य रामायण और महाभारत इसी प्रकार के महाकाव्य हैं। ये दोनों महाकाव्य भारत की राष्ट्रीय एकता के आदर्श गन्थ हैं। ऐतिहासिक और सांस्कृतिक सामग्री के साथ ही साथ भौगोलिक एकता के भी प्रतीक हैं। ''जीवन की ताजगी में यूनान के महाकाव्यों के समान भरपूर, किन्तु विचार और सारतत्त्व में उनसे अन्ततः अधिक गम्भीर और विकसित हैं। ये संस्कृति की परिपक्वता में लैटिन के महाकाव्यों के समान समुन्नत पर ओजगुण में उनसे अधिक शक्तिशाली, प्राणवन्त और यौवनपूर्ण हैं।''[1]

इन दोनों महाकाव्यों में आदिकाल की सम्पूर्ण ज्ञानराशि तथा यथार्थ के धरातल पर बहुमुखी जीवन व्यापारों ने अभिव्यक्ति पायी है। इस सम्बन्ध में कविवर रवीन्द्र नाथ टैगोर का मत है कि भारत में महत् काव्य केवल दो ही हैं।

महर्षि वाल्मीकि कृत रामायण निर्विवाद रूप से 'संस्कृत' साहित्य का आदि महाकाव्य एवं वाल्मीकि को आदि कवि माना जाता है। इस मान्यता का प्रमुख आधार यही है कि आदिकवि वाल्मीकि ने वेद को काव्य का रूप देने का प्रथम और प्रशस्त प्रयास किया था। यह प्रथम प्रयास अपने प्रादुर्भाव के समय से आज तक अनेक काव्यकृतियों के लिए उपजव्य काव्य सिद्ध होता रहा है। यह ग्रन्थ अत्यन्त स्वाभाविक मनोवृत्तियों पर आधारित है। एक व्याघ्र द्वारा क्रौञ्च-वध के उपरान्त क्रौञ्ची के विलाप को सुनकर महर्षि बाल्मीकि की करूणा काव्यरूप में प्रस्फुटित हुई थी

मा निषाद प्रतिष्ठा त्वमगमः शाश्वती समाः ।
यत्क्रोञ्चमिथुनादेकवधीः काम्मोहितम्।।

उपर्युक्त श्लोक ही उस महाकाव्य का प्रेरक तत्व सिद्ध हुआ स्वयं ब्रह्मा जी ने महर्षि बाल्मीकि को श्रीराम का जीवन चरित काव्य बद्ध करने के लिए प्ररित किया इस प्रकार 'बाल्मीकि रामायण' की रचना मानव की मूलभूत भावनाओं के आवेग की स्थिति में ही हुई है। इस ग्रन्थ में हिन्दू धर्म एवं संस्कृति के परम संरक्षक श्रीराम के समग्र जीवन का विषद रूप में काव्यात्मक वर्णन है। इसके रचनाकाल के सम्बन्ध में मतभेद है। 'ए श्लेगल'1 तथा 'जी गोरेसिया'2 ने क्रमशः ग्यारवीं तथा बारहवीं ईसवी पूर्व तथा ''डॉ0 अमरपाल सिंह''3 अन्तः साक्ष्य और बर्हिसाक्ष्य के आधार पर विचार करते हुए ईसा से 500 वर्ष पूर्व रामायण की रचना मानते है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी॰एस॰एन॰पी॰जी॰ कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सप्तकाण्डबद्ध इस महाकाव्य में 24 हजार श्लोक है। प्रत्येक हजार श्लोक का प्रथमाक्षर गायत्री मंत्र के ही अक्षर से प्रारम्भ होता है। इस महाकाव्य में श्रीराम के जन्म से स्वर्गारोहण पर्यन्त कथा को इतिहास और कल्पना के सुन्दर सामंजस्य द्वारा निबन्धित किया गया है। इसमें रामचरित को उदात्त गम्भीरता और दार्शनिक पुष्टता के साथ लोकोन्तर कल्पना से विभूषित कर मुख्य कथा तथा अन्य कौतूहल पूर्ण प्रासंगिक कथाओं के आधार पर मानव की विराट कल्पना शक्ति का दिग्दर्शन कराया गया है।

वाल्मीकि ने ऐसे महान आदर्शो का चित्रण किया है, जो देश और काल से परे सम्पूर्ण विश्व के मनोरंजन तथा नैतिक उत्थान और सफल एवं श्रेयस्कर सामाजिक जीवन के प्रेरणा स्त्रोत है। ''बाल्मीकि का यह महाकाव्य पृथ्वीतल को निदोर्ण कर उगने वाले उस विराट वट वृक्ष के समान है जो अपनी शीतल छाया से भारत के समस्त मानवों को आश्रय देता हुआ प्रकृति की विशिष्ट विभूति के समान अपना मस्तक ऊपर उठाये हुए खड़ा है।[1] 'रामायण' भक्ति भावना, मर्यादा, परोपकार, दया, करूणा, पातिक्रत धर्म आदि का सजीव उदाहरण प्रस्तुत करती है।''[2]

कालक्रमानुसार संस्कृत साहित्य के विकास में आदिम होने पर भी बाल्मीकि की अमृतमयी वाणी में सौन्दर्य सृष्टि का चरम उत्कर्ष तथा महनीय काव्य कला का परम औदात्य है। रामायण में उदात्त कथानक के साथ महाकाव्य के समस्त गुण विद्यमान है।

सुसंगठित कथानक, उदात्त चरित चित्रण प्राकृतिक सुषमा का सौन्दर्यपूर्ण निदर्शन, प्रधान रस 'करूण' तथा अन्य रसो का सुन्दर परिपाक भावोद्रेक की नैसर्गिकता, भावानुकूल शब्द चयन से युक्त यह काव्य भारतीय वाङ्गमय का श्रेष्ठ ग्रन्थ है। अद्वितीय उपमाओं तथा उत्प्रेक्षाओं के साथ ही साथ प्राय: सभी सादृश्यमूलक अंलकारों का प्रयोग प्रासादिक शैली में किया गया है। काव्य में अनुष्टुप, छन्द का अधिक प्रयोग है। अतिशय अलंकारिकता और अतिशयोक्ति पूर्ण कल्पना से रहित इस ग्रन्थ में द्रवीभूत हुए सहृदय कवि की स्वत: प्रस्तुत वाणी में प्रवाहमयता और सरसता प्रत्येक छन्द में दृष्टिगोचर होती है। इस सम्बन्ध में 'डॉ0 पाण्डुरंग राव' का विचार है- ''सम्भवत: बाल्मीकि रामायण की सबसे बड़ी रमणीयता, गतिशीलता और सुखद सम्प्रेषणीयता इसी में है कि वह अनेकानेक मौलिक उद्भावनाओं को जन्म देती है, और उसके बावजूद अपनी आत्मीयता का अभिभावन ही बाल्मीकि रामायण की सबसे बड़ी विशेषता है। रामकाव्य अनेक है, पर रामायण एक है। बाल्मीकि रामायण रामकथा की आत्मा है और अन्य राम काव्य उसके तन, मन और सुमन है। ''[1]

सारांशत: रामायण में वह सब कुछ है जो मानव को लौकिक जीवन में ही देवत्व की कोटि तक पहुँचने की प्रेरणा-शक्ति प्रदान करता है।

विश्व वाङ्मय के इतिहास में महाभारत सबसे उत्कृष्ट एवं विशाल, ऐतिहासिक महाकाव्य है। महाभारत की यह शक्ति सर्वथा सत्य है कि इस ग्रन्थ में जो कुछ है वह अन्यत्र है, परन्तु जो कुछ उसमें नही है वह अन्यत्र कभी भी नही है। इस विशाल महाभारत में एक लाख श्लोक है। इसमें अठारह पर्व है।

प्राचीन काल में देश में प्रचलित अनेक गाथाएँ तथा आख्यान, मौखिक रूप में कुछ नैतिक उपदेशात्मक आख्यान और वैदिक ग्रन्थों के कुछ आख्यानों को एकत्र कर महर्षि वेदव्यास ने महाभारत की काव्य रूप में रचना की। इसका प्राचीनतम नाम 'जय' है। इसके रचनाकाल के सम्बन्ध में मतभेद है फिर भी अन्त: और बाह्य साक्ष्यों के आधार पर इसे 600 ईसवी पूर्व से 500 ईसवी के बीच माना जा सकता है।

महाभारत में मानव जीवन के विविध अंगों का सम्यक चित्रण है। मुख्य कथा कौरवों-पाण्डवों का इतिहास वर्णन ही इस ग्रन्थ का उद्देश्य नही है बल्कि रचना का प्रयोजन हिन्दू-धर्म का विस्तृत और पूर्ण चित्रण भी है। महाभारत के शान्ति पर्व में जीवन की समस्याओ का समाधान है, इसमें केवल आचार और शान्ति विषयक स्त्रोत ही नही, प्रत्युत रणविद्या की बहुत सी बातों का विषद विवेचन किया गया है। यह महाकाव्य मानव को धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इन चारों पुरूषार्थों की उपलब्धि कराता है। महाभारत में पार्थिव-शक्ति के साथ-साथ अलौकिक तत्वों का भी समावेश है। ईश्वर, जीवन सृष्टि, ईश्वर प्रेम, जगत की निस्सारता आदि दार्शनिक तथ्यों का विस्तृत निरूपण किया गया है। वैदिक और लौकिक युगों के संघर्षमय

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी॰एस॰एन॰पी॰जी॰ कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

काल में महाभारत एक संधिपत्र के समान है जिसमें उभयपक्ष के मनीषियों के हस्ताक्षर है। मुख्य कथा युद्ध वर्णन पूर्ण होते हुए भी इस काव्य में प्रधान रस 'वीर' न होकर 'शान्त रस' है क्योंकि महाभारत का मुख्य उद्देश्य धर्मार्थ कार्य की प्राप्ति के साथ-साथ मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करना है।

तात्पर्य यह है कि महर्षि वेदव्यास ने अपने इस महाकाव्य में भारतीय अर्थनीति, राजनीति और अध्यात्यशास्त्र के सिद्धान्तो की सौन्दर्य पूर्ण अभिव्यक्ति की है।

भारत की ही भाँति पाश्चात्य देशों में भी महाकाव्य परम्परा अति प्राचीन है। ईसा पूर्व नवीं शताब्दी में विश्व विख्यात यूनानी महाकवि होमर ने 'इलियड' और 'ओडेसी' नामक दो महाकाव्यों में शताब्दियों की सभ्यता एवं संस्कृति को आत्मसात कर अपनी अतुलनीय काव्य प्रतिभा का परिचय दिया है।

महाकवि होमर द्वारा रचित 'इलियड' विश्व के गौरवशाली महाकाव्यों में से एक है। इस महाकाव्य में स्थान, समय और क्रिया की जैसी एकता है, वह विश्व के अन्य महाकाव्यों में नही दिखलाई पड़ती। इसका अद्भुत प्रबन्ध सौष्ठव ही इसकी अद्वितीय विशेषता है। चौबीस सर्गों में इस बृहत महाकाव्य में ट्राय के युद्ध का वर्णन है। दस वर्षों तक निरन्तर चलने वाले इस युद्ध वर्णन को कवि ने कथानक में इस प्रकार समाहित किया है कि कही भी कृत्रिमता और शिथिलता का आभास नही होता।

नाट्य-तत्वों से सम्पन्न इस महाकाव्य का संवाद सौष्ठव अद्वितीय है। सर्व रस निष्पत्ति होमर की एक महती उपलब्धि है। यद्यपि इसका प्रधान रस वीररस ही है। ''उनकी कविता में वीरता की धुरी पर सारा जीवन घूमता मिलता है।'' होमर की समासोपमायें विश्व साहित्य में अतुलनीय एवं अत्युत्कृष्ट है। ''होमर की उपमाओं के दर्पण में उनके युग के संसार और मनुष्यों को साफ-साफ देखा जा सकता है।'' ''सरलता, गौरवशीलता और गहनता होमर की कविता की प्रधान सिद्धियाँ है।''[3]

असत् पर सत् की विजय इस महाकाल का शाश्वत संदेश है। कवि पलायन को कायरता नही बल्कि बुद्धिमत्ता मानता है। उसका विचार है कि हिंसा और विनाश से प्रेम और विराम, संगीत तथा नृत्य अधिक श्रेष्ठ है। अत: कहा जा सकता है। कि 'इलियड' सम्पूर्ण मानव मूल्यों से सम्पन्न सार्वभौमिक महाकाव्य है।

होमर का दूसरा महाकाव्य ''ओडेसी' है। यह यात्रा, साहस और शौर्य का गौरवशाली ग्रन्थ है। ''नाना देशो की भूलोकोत्तर यात्राओं के वृत्तों में कल्पना का रंग इतना अधिक गहरा है, इंद्रजाल का प्रयोग इतना अधिक विस्मयकारी है, साहस का अस्तित्व इतना अधिक विलक्षण है कि इस महाकाव्य को मानव जाति का प्रथम गौरवशाली उपन्यास कहा जा सकता है।''[4] इस सुखान्त महाकाव्य में कौतूहल, औदात्य, सर्वरस निष्पत्ति, मानवीय मूल्यों की प्रतिष्ठा, अधर्म पर धर्म की, असत् पर सत् की विजय इत्यादि का प्रदर्शन है। ''वर्ण्य-विषय विविधतापूर्ण ओडेसी की कथा इतिहास, धर्म, दर्शन, काव्यशास्त्र इत्यादि की दृष्टि से भी अतीव महत्त्वपूर्ण रूप प्रदान कर देती है।''[5]

उपर्युक्त पाश्चात्य महाकाव्यों पर विहंगम दृष्टिपात करने पर ज्ञात होता है कि महाकवि होमर कृत 'इलियड' और 'ओडेसी' पाश्चात्य आदि महाकाव्य है। इसी भाँति भारत में भी बाल्मीकि और ब्यास द्वारा रचित 'रामायण' और 'महाभारत' भारत के आदि महाकाव्य है। पृथक-पृथक देशकाल में सर्जित पृथक पृथक संस्कृति का वहन करने वाले इन महाकाव्यों में कथा तत्व, विचार तत्व भावनात्मकता एवं जीवन-दर्शन सम्बन्धी अनेक समानतायें है।

रामायण का प्रचार गाकर हुआ इसी भाँति इलियड और ओडेसी का प्रचार भी गाकर ही हुआ था भारतीय महाकाव्य पौराणिक आख्यानो से युक्त है। होमर ने भी अपने महाकाव्यों में पौराणिक आख्यानो का समावेश किया है। ओडेसी का वास्तविक अंत बाइसवें सर्ग से ही हो जाता है।, किन्तु कथा की सुखान्तता क लिए दो अन्य सर्गों का प्रणयन किया गया है। इसी प्रकार रामायण भी युद्ध काण्ड के पश्चात समाप्त हो जाती है। उत्तरखण्ड प्रक्षिप्त माना जाता है। जिस प्रकार रामायण की सम्पूर्ण कथा का केन्द्र बिन्दु उसके नायक ''श्रीराम'' है।, उसी प्रकार आडेसी की सम्पूर्ण कथा 'ओडीसियस' के इर्द-गिर्द ही धूमती है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी॰एस॰एन॰पी॰जी॰ कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

दोनों ही देशों के महाकाव्यों में स्वयंवर द्वारा विवाह की प्रथा है। साथ ही धनुष-भंग इसकी आवश्यक शर्त है। 'रामायण' में सीता की प्राप्ति के लिए जनक ने धनुष की प्रत्यंचा झुकाने की शर्त रखीं थी, ओडेसी में पेनीलोप ने ओडीसियस का विशाल धनुष रखवाकर उसकी प्रत्यंचा झुकाने वाला प्रणयी ही उसका वरण कर सकेगा, ऐसी घोषणा कर दी थी। दोनों देशो के महाकाव्यों में दून्द-युद्ध का वर्णन मिलता है। 'रामायण' और 'महाभारत' के युद्ध में धनुष वाण का प्रयोग किया गया था 'इलियड' 'ओडेसी' मं वर्णित युद्ध भी धनुष वाण से ही लड़ा गया था।

'रामायण' और 'इलियड' दोनों की कथा का मूल बिन्दु स्त्री अपहरण है। रामकाव्य में सीता का अपहरण रावण ने राम की अनुपस्थिति में किया तथा इलियड में ट्राय के राजकुमार पेरिस द्वारा अतीव सुन्दरी 'हेलेन' का अपहरण उस समय किया गया जब 'मेनेलाज' अपने नगर से दूर था बाल्मीकि ने सीता को परम सुन्दरी तथा होमर ने हेलेन को विश्व की सर्वश्रेष्ठ सुन्दरी के रूप में चित्रित किया है। 'रामायण' और 'महाभारत' के नायकों को वनवास दिया गया है। इसी प्रकार की घटनायें इलियड और ओडेसी में भी दिखलाई पड़ती है।

विभीषण के पारस्परिक मतभेद के कारण रामायण में रावण का विनाश होता है। इलियड में प्रमुख फरिश्ते ल्यूसिफर के मतभेद के कारण उसका शैतान के रूप में पतन होता है। 'महाभारत' में भी कौरव पक्ष में आपसी वैमनस्य हो जाता है। परिणामस्वरूप कौरव पक्ष की पराजय होती है। इलियड में 'मैनलाओस' के वाण लग जाने पर आगामेम्नान विलाप करते है, ऐसे ही रामायण में लक्ष्मण के शक्ति वाण के आघात से मूर्च्छित भ्राता को गोद में लेकर, 'श्रीराम' विलाप करते है। दोनों भारतीय महाकाव्यों में दिव्य शक्तियाँ ब्रह्मा, विष्णु, महेश, दुर्गा एवं इन्द्र इत्यादि प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से मानव की सहायता करती है। इसी भाँति इलियड में 'मिनरवा' बुद्धि की देवी 'जूनो' शक्ति की अधिष्ठात्री और वेनस प्रेम की देवी मानवीय कृत्यो में हस्तक्षेप करती है।

बाल्मीकि और होमर दोनों ने समाज का व्यापक चित्रण किया है। समकालीन धर्म, दर्शन, कला, युद्ध, रहन-सहन, रीति-रिवाज इत्यादि का वर्णन दोनों देशों के महाकवियों ने किया है।

अयोध्या के भवन का वैभव लंकादि का ऐश्वर्य वर्णन तथा सुन्दर कलाओं के वर्णन तत्कालीन संस्कृति के प्रतीक है। होमर ने भी 'मेनेलॉज' का भवन कॉसे, सोना, चाँदी, हाथी दाँत कान्ति से निर्मित वर्णित किया है। अत: दोनों महाकवियों ने अपने-अपने देश की संस्कृति का प्रतिनिधित्व किया है। भारतीय आदि महाकाव्यों में मृत्योपरान्त पात्रों को चिता में रखकर भस्म किया जाता है। जिस प्रकार आडेसी के ओडीसियस ने अनेक यात्रायें की, उसी प्रकार रामायण में नायक राम तथा महाभारत के पाण्डवों को भी अनेक यात्रायें करनी पड़ी।

होमर विश्व वाङ्मय में वीररस के सर्वश्रेष्ठ कवि है। व्यास और बाल्मीकि ने भी अपने काव्यों में वीररस का सुन्दर परिपाक किया है।

चरित्र-चित्रण की दृष्टि से भी दोनों देशों के कवियों में समानतायें है। दोनों ने ही अपने पात्रो में परिस्थिति के अनुकूल कोमलता, कठोरता, इत्यादि का मर्मस्पर्शी चित्रण किया है। पात्रों के संस्कारगत स्वभावगत परिस्थितिगत तथा परिवेशगत चित्रण में दोनों ने अद्भुत सफलता प्राप्त की है। मेनेलाओस और आगामेम्नान का भ्रातृप्रेम राम तथा लक्ष्मण के भ्रातृप्रेम की समानता करता है। मेघनाद तथा हेक्टर के चरित्रिक गुणों में काफी साभ्य है। श्रेष्ठ वक्ता एवं वृद्ध सम्मतिदाता के रूप में 'नेस्टर' रामकाव्य के 'जाम्बवान' का स्मरण करा देते ह। 'डायमोडीज' 'इलियड' का महाभारत के अभिमन्यु जैसा ही है। बाल्मीकि के सुग्रीव, हनुमान, रावण, मेघनाद आदि होमर के नेस्टर, डायमोडीज के समान प्रहार और पलायन दोनों में अपनी निपुणता का परिचय देते है। पोसीडन 'इलियड' और 'ओडेसी' के एक प्रभावशाली देवता है। इनको देखकर त्रिशूलधारी भगवान 'शंकर' का स्मरण अनायास ही हो जाता है। स्वर्ग के देवता 'जिसस' सागर तथा भूकंप के देवता 'पोसीडन' पाताल और मृत्यु के देवता 'हेडीज' पशुरक्षक तथा स्वास्थ्यदाता 'अपोलो' युद्धदेवता

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी॰एस॰एन॰पी॰जी॰ कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

'एरीज' शिल्प देवता तथा ज्वलनकर्ता 'हेफेस्टस' प्रकाश देवता हाइपेरियन तथा शक्ति की देवी 'जूनो' आदि इन्द्र, वरूण, रूद्र, मरूत, कार्तिकेय तथा अग्नि, सूर्य, दुर्गा इत्यादि से मिलते जुलते है।

जीवन-दर्शन सम्बन्धी विचारों में भी समानता है। भारतीय महाकाव्यों में बहुदेवोपसना पर बल दिया गया है। होमर भी बहुदेववाद पर विश्वास करते है। दोनों देशो के महाकाव्यों में बलि की प्रधानता है। पर स्त्री अपहरण अथवा दुर्व्यवहार एक अक्षम्य अपराध है। इस अपराध का दण्ड मिलना ही चाहिए। इस दर्शन को होमर, व्यास तथा बाल्मीकि तीनों ने मान्यता दी है। महापंडित और महान योद्धा 'रावण' का वध भी इसी दुष्कृत्य के परिणाम स्वरूप हुआ, द्रोपदी के साथ दुर्व्यवहार करने वाला दुर्योधन अपने साथियो के साथ विनष्ट हुआ पर नारी 'पेनीलोप' के प्रति अनुचित मोह के कारण 'ओडेसी' के 'एंटोनस' इत्यादि प्रणयी जनों का विनाष हुआ था अत: दोनों ने ही नारी जाति के गौरव की प्रतिष्ठा की है।

असत पर सत् की विजय की, अधर्म पर धर्म की विजय का रामायण, महाभारत, ओडेसी सभी में यशोगान हुआ है। बाल्मीकि की भाँति होमर भी गार्हस्थ जीवन में पति-पत्नी की एक निश्स्ता पर बल देते है। विवाह से पूर्व पुरुष व्यवहार में मर्यादाओं का पालन, अतिथि को देवतुल्य मानना, जीवन की समस्त अच्छाइयों और बुराइयों को ईश्वर प्रदत्त मानकर सहर्ष स्वीकार करना इत्यादि सिद्धान्त भारतीय महाकाव्यो के दार्शनिक विचारों से काफी साम्य रखते है।

बाल्मीकि, व्यास तथा होमर की उपर्युक्त वर्ण्य विषय, चरित्र-चित्रण एवं जीवन दर्शन सम्बन्धी समानताओं के होते हुए भी अलग-अलग परिवेष में सर्जित विवेच्य महाकाव्यों में आकार, दृष्टिकोण, चरित्र चित्रण, जीवन दर्शन, उद्देश्य सम्बन्धी कुछ विषमतायें भी है।

बाल्मीकि महर्षि थे। उनकी कविता का प्रार्दुभाव क्रोचवध की करूणा से हुआ हामर नेत्रहीन चारण थे। उनकी कविता जीविका का साधन थी अत: जनरूचि का ध्यान रखना स्वाभाविक ही है। जबकि बाल्मीकि की कविता में वैयक्तिकता अधिक है।

आकार की दृष्टि से रामायण, महाभारत तथा इलियड ओडेसी में समानता नही है। इलियड और ओडेसी दोनों मिलकर भी रामायण के अर्द्धभाग के बराबर है। महाभारत तो कई गुना विशाल है। दोनों कवियो के आदर्शो में भी विषमता है। रामायण और महाभारत आदर्श की दृष्टि से धर्म का प्रतिपादन करते है।, जबकि होमर का धर्म यथार्थ के अधिक निकट है।

कथा की दृष्टि से बाल्मीकि में आदशवादिता, व्यापकता और लालित्य है, तो होमर का कथानक यथार्थ और मनोरंजन के अधिक निकट है। होमर के साहस और यात्रा के वर्णन बाल्मीकि के वर्णनों से अधिक श्रेष्ठ है। भारतीय महाकवियो के साहस और यात्रा के वर्णन में अलौकिकता का पुट मिला हुआ है पग-पग पर देवी, देवता सहायता करते है। इसकी अपेक्षा होमर के वर्णन मानवीय धरातल पर आधारित होने के कारण अधिक स्वाभाविक है। बाल्मीकि और व्यास के युद्ध वर्णन पक्षपातहीन और न्यायसंगत है। रामायण में 'राम के पक्ष के वीरो का विनाश बहुत कम होता है। महाभारत में भी पाण्डव पक्ष के प्रमुख वीर सुरक्षित रहते है। यद्यपि वे संख्या में न्यून है। इसके विपरीत होमर ने आगामेम्नान, डायोमेडीज, ओडीसियस, मेनेलाओस और प्यूकोस जैसे शक्ति सम्पन्न वीरों का हनन दिखाया है। यहा तक कि काव्य के नायक एकिलीज तक की मृत्यु दिखाई है।

महाकाव्यों के विषय में भी प्रमुख अन्तर है। भारतीय आदि महाकाव्य सुखान्त है। जबकि पाश्चात्य महाकाव्य दुखान्त है। रामायण में भावुकता, सरलता, संयम, कर्तव्यपालन, आज्ञाकारिता का साम्राज्य है। भारतीय महाकाव्यों में दया क्षमा, ममता, त्याग, विनय, सहनशीलता, अनीति का दमन, नीति का उन्नयन और उच्च मानवीय गुणों का विकास, क्रूरता, बर्बरता, असत और कूप्रवृत्तियों का विरोध तथा सच्चे मानव धर्म की स्थापना है। इसके विपरीत इलियड और ओडेसी में बर्बरता और क्रूरता अपनी चरम सीमा पर है। क्रूरता का इससे बढ़कर और क्या उदाहरण हो सकता है। कि हेक्टर की मत्यु के पश्चात् भी उसका शव रथ में बाँधकर ट्राय के प्राचीर में घसीटा जाता है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी॰एस॰एन॰पी॰जी॰ कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

भारतीय महाकाव्यों के पात्र धर्मनिष्ठता तथा अपने आदर्शों के पालन के कारण पूज्य और देवतुल्य है। जबकि होमर ने देव अथवा दानव का चित्रण न करके सामान्य मानव का चित्रण किया है। उनके नायक सर्वगुण सम्पन्न नही है।, उनमें मानव सुलभ दुर्बलतायें भी है। एकिलीज क्रोधी और भयानक योद्धा है। यहा तक कि अन्त में नायक की मृत्यु भी दिखाई गई है। दूसरी ओर लोक कल्याण ही भारतीय नायक का मुख्य लक्ष्य है तथा निरन्तर महान कार्यों में ही निरत दिखाई दता है और अन्त में अन्याय पर न्याय अथवा असत् पर सत् की विजय नायक की विजय द्वारा ही प्रदर्शित की जाती है। बाल्मीकि ने मानवीय चरित्रों की विशद अवतारणा की है। उनके पात्र मानव जीवन के प्रेरणा स्त्रोत है।

भारतीय महाकवियों के चरित्र-चित्रण में मानवतावादी गुणों का ऐसा विकसित रूप विद्यमान है कि उन चरित्रों का अनुगमन कर व्यक्ति उच्च या आदर्श मानव की प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। बाल्मीकि के पात्रों में होमर की अपेक्षा नैतिकता अधिक है। लंकाधिपति सीता का अपहरण अवश्य कर ले जाता है फिर भी बलात उन्हें अपने महल में नही ले जाता है। अशोक वाटिका में ही रखता है। मृतको के प्रति सम्मान की भावना रामादि सदपात्रों में ही नही है।, अपितु रावण, मेघनाद आदि में भी इस नैतिकता का निर्वाह किया है।

वैवाहिक जीवन की व्यवहारिकता में भी अन्तर है। इलियड की नायिका 'हेलेन' का अपहरण 'पेरिस' उसकी स्वेच्छा से करता है, क्योंकि काम देवी अफ्रोडाइटी ने उसकी बुद्धि भ्रष्ट कर दी थी 'हेलेन' स्वयं पेरिस को पतिरूप में स्वीकार करती है। सीता का अपहरण बलात हुआ था। सीता स्वप्न में भी रावण को वरण करने की बात नही सोचती। बन्दिनी रूप में भी सीता निर्भयता से रावण का अपमान करने का साहस करती है। अत: होमर का चरित्र चित्रण यथार्थ सम्पन्न स्वाभाविक एवं न्याय संगत है। बाल्मीकि अपने चित्रण में कही भी मर्यादा और आदर्शो का उल्लंघन नही कर सके है।

इलियंड और ओडेसी में वीररस की ही प्रधानता है। युद्ध ही उनका मूलतत्व है। अत: संघर्ष का विस्तार है। व्यास और बाल्मीकि धर्मबल की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते है। नायक की वीरता उसके पराक्रम और बाहुबल पर नही बल्कि सत्यनिष्ठा, आत्म त्याग और उदारता में लक्षित, होती है। यही कारण है कि यदि इलियड, ओडेसी संघर्ष प्रधान पाश्चात्य जीवन का प्रतिनिधित्व करते है। तो रामायण महाभारत त्याग और शन्ति प्रधान भारतीय संस्कृति के प्रतीक है। पश्चात्य महाकाव्यों में वर्णित सभ्यता अशान्तिमय एवं अव्यवस्थित है जबकि रामायण की सभ्यता शिष्ट और व्यवस्थित है।

रामायण में वर्णित रामकथा में लोक सम्पृक्ति भी है। प्रजा भी राजकार्य में सहयोग देती है। राम वनवास पर प्रजा आर्त्तस्वर में चीत्कार करती है, लेकिन होमर की प्रजा राजकार्य में किसी प्रकार का हस्तक्षेप नही करती। पाश्चात्य महाकाव्यों में देवतादि अलौकिक तत्वो का समावेश हुआ है। ये अलौकिक तत्व प्रत्यक्षत: मानवीय कार्य कलापों में हस्तक्षेप करते है। साथ ही वहाँ देवताओं से भी संघर्ष के वर्णन मिलते है। हमारे यहाँ युद्ध केवल राक्षसों से ही हुआ है। बाल्मीकि के देवताओ का पृथ्वी की ओर अधिक आक्रषण नही है। वे स्वर्गासीन है। और वही से पुष्प वर्षा करते है। एवं मानवीय सुख दु:ख में सहयोग करते है।

बाल्मीकि के विलाप वर्णन में जिस करूणा का उद्रेक हुआ है, वह होमर में नही दिखलाई पड़ती। उन्होंने मानवीय सम्बन्धें के विरह और विलाप के अत्यन्त कोमल चित्र उतारे है। होमर के महाकाव्यों का कथा प्रवाह अधिक ठीक है। अत: उनको ऐसे स्थलो का चित्रण करने का अवकाश कम मिल सका है।

रामायण में उदात्त काव्य मूल्यों का समावेश है तो इलियड ओडेसी में कथा-मूल्य अधिक उच्चकोटि के है। बाल्मीकि में यदि सहदयता और कोमलता अधिक है, तो होमर में रोचकता, प्रचण्डता और कौतूहल अधिक है। बाल्मीकि का प्रकृति वर्णन अधिक विस्तृत है। होमर का यथार्थवादी वर्णन अधिक उच्च कोटि का है।

काल्पनिकता की दृष्टि से दोनों महाकवियो के विषय विषय में किसी प्रकार का संदेह नही किया जा सकता फिर भी होमर ने इस क्षेत्र में अधिक सफलता पाई है। उनके वस्तु एवं व्यापार वर्णन, स्वाभाविकता के अधिक निकट है। बाल्मीकि ने अलौकिक तत्वों का अधिक समावेश किया है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

पाश्चात्य एवं पौरस्त्य आदि महाकाव्यों का तुलनात्मक अध्ययन

डॉ॰ मंजूलता श्रीवास्तव
प्रवक्ता, हिन्दी विभाग,
डी०एस०एन०पी०जी० कालेज,
उन्नाव

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

व्यास बाल्मीकि ने अपने महाकाव्यो में अनेक छन्दो का प्रयोग किया है। किन्तु होमर ने केवल एक ही छन्द 'हेक्सामीटर' का प्रयोग किया है।

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते है। कि दोनों देशों में इतनी अधिक दूरी होते हुए भी महाकवियों की रूचि, विषय चयन, कलात्मकता, उद्देश्य और भावनात्मक दृष्टिकोण पर विचार करने पर कुछ विषमताओं के साथ दो भिन्न-भिन्न संस्कृतियों को वहन करने वाले इन महाकाव्यों में बहुत अधिक समानता देखने को मिलती है।

संदर्भः-

1- इंगलिश एपिक हीरोइक पोउट्री, ले0- एन. मेकलीन डिकसन पृ0 27
2- वाल्मीकि रामायण, बालकाण्ड 2/15
3- जर्मन ओरिएन्टल जर्नल, भाग 3 पृ0 379
4- रामायण, भाग 10, भूमिका ।
5- तुलसी पूर्व, राम साहित्य ले0डॉ0 अमरपाल सिंह पृ0 22
6- संस्कृत में रामकथा और बाल्मीकि रामायण-डॉ0 पाण्डु रंग राव श्रीराम कथा मन्दाकिनी प्र0 मोदी रबर लिमिटेड मोदी नगर पृ0 120
7- विश्वकवि होमर और उनके काव्य, डॉ0 राय प्रसाद मिश्र पृ0 158
8- विश्वकवि होमर और उनके काव्य, डॉ0 राय प्रसाद मिश्र पृ0 208
9- कम्पलीट वकर्स आव होमर, प्रस्तावना अन्तिम पृष्ठ पृष्ठ
10- विश्वकवि होमर और उनके काव्य पृ0 46
11- विश्वकवि होमर और उनके काव्य पृ0 218

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN